मई–जून 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 ढ़ाईस्टेप

उड़ान

7 Me and my uncle / I Prepaird tea

8 सूरज का गुस्सा

9 साथ रहना

10 ईमानदारी

11 बंदर का ज्ञान / मेरी प्यारी गाय

12 सोडियम लगाए पानी में आग / गोल मिठाई

ज्ञान विज्ञान

13 कैल्शियम की कमी

14 जादुई बोतल

जोड़-तोड़

16 अलबर्ट आइंस्टाइन

कलाकारी

17 पुए का पेड़

बात लै चीत ले

18 त्यौहार चला गया / गर्म राबड़ी

19 डंडे की मार

20 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

21 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

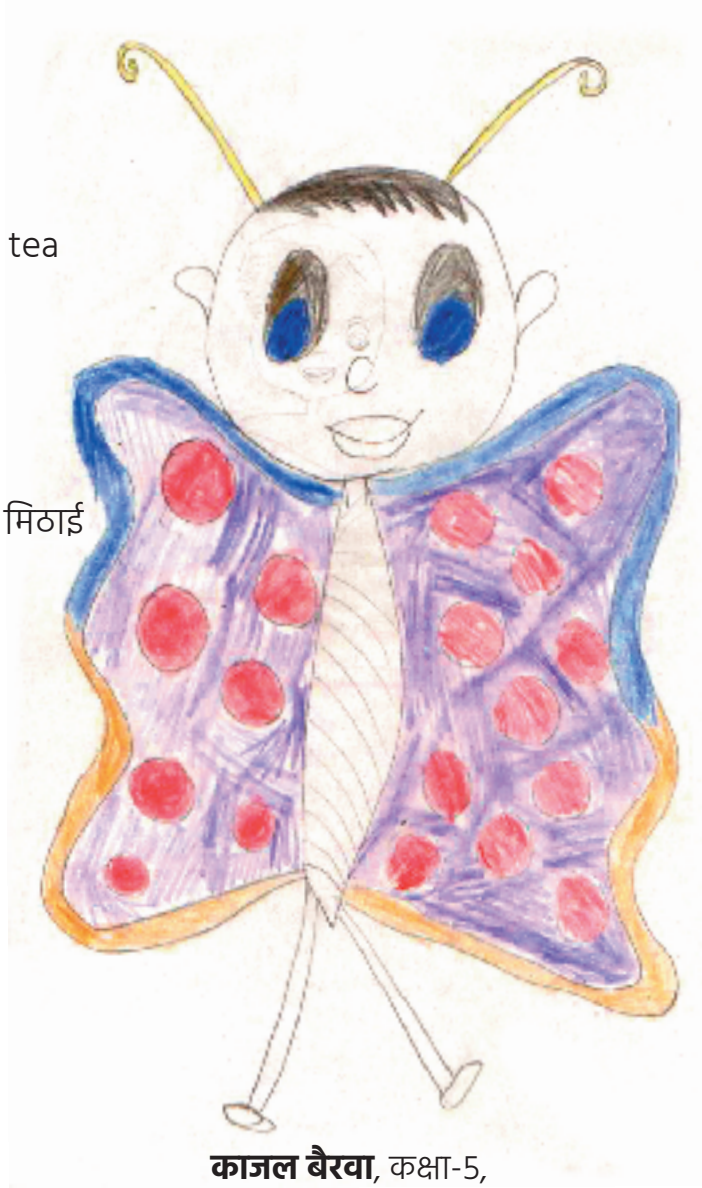

काजल बैरवा, कक्षा-5,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **मोमा मीना**, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय खाण्डोज
वर्ष 13 अंक 143-144

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन: 07462-220957

दीपा सैन, कक्षा-6, रा.प्रा.वि. जमूलखेड़ा

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

कार्तिक सैनी, कक्षा-6,
राजकीय विद्यालय खाण्डोज

आकाश बैरवा, कक्षा-1, उदय सा. पाठ. कटार

ढ़ाईस्टेप

हमारें हमारे सर हमें सिखाने के लिए बहुत मेहनत करते थे। एक दिन उन्होने कहा कि तुम लोग रोज सुबह और शाम को हैंडबॉल खेलने आया करो। हम हैंडबॉल खेलने तो आ जाते थे लेकिन खेलने की कोशिश नहीं करते थे। बस आते और पासिंग करते। ढ़ाईस्टेप व पेलंटी फाऊल कैसे निकाला जाता है? बाईट कैसे निकाली जाती है? ये सब बिल्कुल भी नहीं आता था। मगर सर ने हमें जैसे तैसे फाऊल निकालना और बाकी चीजें तो सिखा दी थी। हम उन सबको रोज रिपिट करते थे। जिससे हम फाऊल निकालना, ड्रिबलिंग करना, बाईट निकालना सीख गये। मगर ढ़ाईस्टेप देना नहीं सीखे। सीखते भी तो कैसे? बिल्कुल भी कोशिश नहीं करते थे। सर के जाने के बाद बिल्कुल भी तैयारी नहीं करते थे और फिर से पासिंग करने लग जाते थे। दूसरी बात हम आज तक किसी भी टीम से हैंडबॉल का एक भी मैच नहीं खेले थे।

एक दिन सर ने जब हमसे कहा कि तुमको तितरिया गाँव में हैंडबॉल खेलने के लिए लेकर जायेंगे। सर ने हमसे कहा कि तुम अब तैयारी बहुत अच्छी करो। मगर हम सब तैयारी तो करते पर ढ़ाईस्टेप की नहीं। आखिरकार तितरिया जाने का दिन आ ही गया। सब बच्चों का मेच देखकर हम बहुत खुश हो रहे थे। मगर एक दुःख भी था हमसे ढ़ाईस्टेप मारना नहीं आता था। इस बात से ही मन परेशान हो रहा था और वहाँ पर सभी बच्चे ढ़ाईस्टेप से गोल कर रहे थे।

जब हमारा मैच हुआ तो हम बिल्कुल भी ढाई स्टेप से गोल नहीं मार पा रहे थे। फिर भी हम दो टीमों से जीत गये। क्योंकि उन टीमों का खेल हमसे भी कमजोर था। जीतने से हमको बहुत ज्यादा खुशी हुई। मगर हमारा तीसरा मैच जिस टीम से होने वाला था वह टीम दूसरी टीम के साथ खेल रही थी। हमें उनके खेल को देखकर ही डर सा लगने लगा। उन्होंने उस टीम को आराम से हरा दिया। जब हमारा मैच हुआ तो हमको डर लग रहा था फिर भी हमने उन पर दो गोल किये। कम गोल करने के कारण हम हार गये। हमें बहुत दुःख हुआ मगर कर भी क्या सकते थे। हमारी ही गलती थी जो हमने ढ़ाईस्टेप नहीं सीखा।

अंकिता सैनी, उम्र-10 वर्ष फेलोशिप सेंटर खवा

वापस गाँव में आकर हमने प्रेक्टिस आरंभ कर दी। हम रोज खेलने जाते। ढ़ाईस्टेप सिखाने के लिए सर ने फिर से चौकी रख दी और चौकी से ढाई स्टेप देने लगे। हमारे स्टेप पहले से बेहतर थे। अब मैं भी ढ़ाईस्टेप सीख गई हूँ।

एक बात बताना तो भूल ही गये। तितरिया में दो लड़कियों का सलेक्सन स्टेट के लिए हुआ था। वहाँ के गुरूजी ने हमें तितरिया कैम्प में बुलाया। हम बहुत खुश थे कि हम खेलने के लिए स्टेट पर जायेंगे। आखिरकार वह दिन आ ही गया। जिस दिन हमें वहाँ जाना था। हम दीदी के साथ बस से नासिरदा चले गये। दीदी हमें पीटीआई के रूम पर छोड़ आई। हम पीटीआई के साथ मैदान में खेलने चले गये। वहाँ की लड़कियों ने हमें उनके साथ हैंडबॉल खिलाया। लेकिन वे हमसे इतनी नहीं बोलती थी और न ही हम उनसे बोलते थे। हम कहीं भी जाते तो उनके पीछे-पीछे जाते। हमारे मुँह पर उदासी सी छाई रहती थी। हमारे मुँह की उदासी देख वहाँ के सर हमसे कहते कि तुम्हे यहाँ कोई परेशानी तो नहीं है। घर वालों की याद तो नहीं आती। पर हम उन्हें कोई जवाब नहीं देते थे। देते भी तो क्या घर वालों की याद तो आती थी, पर अब यहाँ आ ही गये तो खेल कर जाना ही पड़ेगा। हम वहाँ कैम्प पर तैयारी करके अचरोल चले गये। अचरोल हम तीन टीमों से खेले। कोटा और पाली से तो हम जीत गये लेकिन श्री गंगानगर से 1 गोल से हार गये। क्योंकि हमारे साथ वहाँ चिटिंग हुई थी।

पीटीआई सर ने कहा कि कल हम घर जायेंगे। उसी रात हमारी दीदी का फोन आया और हमें अपने पास बुला लिया। हमें पीटीआई सर दीदी के पास पहुँचा आये। हम दीदी के पास आकर बहुत खुश हुए। हमें फरिया और दीदी के पास आकर ऐसा लगा जैसे हम अपने घर ही आ गये हों। हमने उन लड़कियों के साथ खूब मस्ती की और फिर सुबह बस में बैठकर घर आ गये। टीम के साथ खेलने जाने पर हमने बहुत कुछ सीखा और हमें यह भी पता चला कि हम घर से पहली बार कहीं बाहर खेलते हैं तो हमें बहुत सी परेशानियाँ आती हैं।

कोमल, सफेदी गुर्जर, समूह-सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

Me and my uncle

One day I went to graze goats. I was grazing goats. Suddenly I heard voice. I was afraid and i away to my goats. Then i began to graze goats. I say there my uncle was grazing goats here. I went to there. I said, Hello uncle. My uncle said to me, what are you doing? I am also grazing goats. He said, Let us come. I was happy. I was grazing goats with my unle. There was a leopard. I was worried. I said to uncle. My uncle was danger. My uncle killed leopard, my uncle was brave. I was happy.

I prepaird tea

One day I was alone at my home. Suddenly some guests came to my home. I gave them water. I thought of making tea for guests. I burnt the gas. I put bhagani on the gas. I put a glass of water in it. When the water was boiling I put the leaves in it. After some time I put milk in it for some time boiling. I put suger in it. Tea is ready. I served in the cups. I served tea guests.

Ramveer Gurjar, Class-7, Uday Samudayik Pathshala Girirajpura

महेश सैनी, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय रामसिंगपुरा

सूरज का गुस्सा

भूपेन्द्र सैनी, उम्र-11 वर्ष, फेलोशिप सेंटर-खवा

एक बार की बात है। सूरज नाराज हो गया और उसने सब तरफ अंधेरा कर दिया। जिससे सभी मनुष्य व जंगल के जानवर परेशान हो गये। सूरज आसमान से यह सब देख रहा था और खुश हो रहा था ये सब परेशान हो रहे हैं। सूरज ने देखा कि एक गिलहरी अंगूर खाने में लगी हुई है। सूरज गिलहरी के पास आया और बोला, "क्या तुम्हें अंधेरे से परेशानी नहीं हो रही है?" गिलहरी बोली, "नहीं, यहाँ पर बहुत सारे जुगनू हैं जिनके उजाले में मुझे अंगूर दिख जाते हैं जिन्हें मैं खा लेती हूँ और खेल भी लेती हूँ।" सूरज बोला, "ये अंगूर मुझे भी खिलाओ।" गिलहरी ने सूरज को अंगूर खिलाये तो सूरज बहुत खुश हुआ। गिलहरी ने कहा, "अब तुम फिर से उजाला कर दो और अपने घर चले जाओ।" फिर सूरज ने उजाला कर दिया और वहाँ से बहुत सारे अंगूर लेकर वापस अपने घर आ गया।

समुद्र, रिंकू, विक्रम, समूह-फुलवारी, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

साथ रहना

एक गाँव था। उस गाँव में एक बार बहुत तेज बरसात हुई। गाँव में पानी भर गया। लोग अपने घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे थे। कुछ लोगों ने मिलकर पानी को तालाब की ओर मोड़ दिया। तालाब के पास एक बच्चा था जो अनाथ था। उसका कोई भी नहीं था। वह बच्चा जंगल में जाकर लकड़ी काटकर अपना जीवन बिता रहा था। तभी उस गाँव में एक शेर आया। वह शेर रोजाना एक आदमी को खा जाता। कभी कोई जानवर को भी खा जाता। उससे गाँव के लोग बहुत परेशान थे।

सब मिलकर राजा के पास मदद मांगने गये। राजा बहुत बेकार था। वह अपनी प्रजा की सुरक्षा-देखभाल नहीं करता था। वह लड़का रोज की तरह जंगल में लकड़ियाँ काटने गया तो उसे एक हाथी मिला। वह हाथी से बोला कि तुम मेरे दोस्त बनोगे क्या? हाथी बोला, हाँ बनूंगा, वैसे भी मेरा कोई दोस्त नहीं है।

दोनों जंगल में घुमते-फिरते हैं। लड़का उस हाथी को अपने गाँव की बात बताता है कि हमें एक शेर ने परेशान कर रखा है। हाथी ने कहा कि यह शेर पहले इस जंगल में भी जानवरों को खाता था लेकिन हम सभी जानवरों ने मिलकर उसे यहाँ से भगा दिया। अब वह कभी जंगल में नहीं आयेगा। हाथी की बात सुनकर लड़का बोला कि तुम ही मेरे गाँव को उस शेर से बचा सकते हो। वह हाथी से बोला कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा, लेकिन तुम्हे गाँव वालों से कहना होगा कि वे पेड़ों को नहीं काटे, जानवरों को नहीं मारे। लड़का हाँ कह देता है। फिर हाथी शेर को वहाँ से भी भगा देता है।

सभी लोग खुश हो जाते हैं। लड़का हाथी के साथ जंगल में जाकर रहने लग जाता है। कुछ दिनों बाद गाँव वाले उस लड़के को लेने जाते हैं तो लड़का गाँव वालों के साथ जाने से मना कर देता है। गाँव वाले हाथी से कहते हैं कि हम इस लड़के को हमारा राजा बनायेंगे और हाथी तुम भी हमारे साथ चलो। फिर हाथी और लड़का गाँव वालों के साथ गाँव में आ गये। गाँव वालों ने लड़के को राजा बना दिया। फिर वे सभी खुशी-खुशी साथ में रहने लगे।

पुष्पेन्द्र मीना, उम्र-13 वर्ष, समूह-उजाला

ईमानदारी

दिलखुश बैरवा, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

एक जंगल में दो भाई रहते थे। वे दोनों जंगल से जड़ीबुटियाँ लाते और उनकी दवाई बनाकर बेचते थे। उन दवाइयों को बेचकर ही अपना गुजारा चलाते थे। बहुत दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि तुम मुझसे बड़े हो और मुझसे कम पैसे लाते हो। इस बात पर छोटा भाई बड़े भाई के ऊपर जोर-जोर से हंसने लगा। बड़े भाई को छोटे भाई कि बात सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने कहा कि मैं पहले तुमसे ज्यादा पैसा लाता था। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि देख लेना आज भी मैं तुमसे ज्यादा पैसे लाऊंगा।

छोटे भाई ने आज शर्त जीतने के चक्कर में दवाइयों में ज्यादा पानी डाल दिया। वे दोनों दुकान पर दवाई बेचने गये। दुकानदार ने आज उनकी दवाइयाँ चेक कर ली। बड़े भाई की दवाई अच्छी थी पर छोटे भाई की दवाइयों में ज्यादा पानी था। वह दुकानदार छोटे भाई को गालियाँ देने लगा और कहने लगा कि मुझे तो पता ही नहीं है, तुम लोग मुझे कितने दिनों से पागल बना रहे हो। वो तो आज अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हारी दवाइयाँ चेक कर ली। दुकान वाले ने पुलिस को फोन किया। छोटा भाई डरने लगा। वह डर के मारे काँप रहा था। थोड़ी ही देर में पुलिस आ गई। उस पुलिस वाले ने दुकानदर से कहा कि यह जो दवाई रोज देने आता था वो दवाई भी चेक करो। उन्होंने पूरी दवाइयाँ चेक की पर वे दवाइयां अच्छी थी। उनमें इतना पानी नहीं था।

पुलिस वाले ने छोटे भाई से पूछा कि आज तुमने दवा में इतना पानी क्यों डाला। उसने उसको पूरी बात बताई। फिर उस पुलिस वाले ने कहा कि आगे से ऐसी शर्त कभी भी मत लगाना। आगे से ऐसी गलती कभी भी मत करना। इस बार मैं शर्त के चक्कर में छोड़ रहा हूँ। अगली बार बिल्कुल नहीं छोड़ूंगा। दोनों भाई जब घर आ रहे थे तभी बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा पैसे कम आये चाहें ज्यादा। पर हमेशा ईमानदार रहना चाहिए। वे दोनों घर आ गये और अब छोटा भाई ईमानदारी से काम करने लगा। उसने बड़े भाई को ताने मारना भी छोड़ दिया।

दीपा गुर्जर, समूह-सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बंदर का ज्ञान

हाथी आया झूम के
धरती मिट्टी चूम के
हाथी गया बाजार
लेने थे दो-चार अनार
बंदर बोला खाओगे अनार
हो जाओगे बिमार
हाथी बोला ज्यादा ज्ञान मुझे ना दो
अनार के संग दो दर्जन केले और दो
मैं हूँ हट्टा, मैं हूँ कट्टा
मैं तो हूँ पहलवान पठ्ठा।

फुलवारी समूह के सभी बच्चे,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मेरी प्यारी गाय

मेरी गाय सबसे प्यारी
चाँद सी दिखे न्यारी न्यारी
घास खाती हरी हरी
मुझसे बोले खरी खरी
मेरी गाय है उड़नपरी
छोटे छोटे कान हैं उसके
सुंदर सुंदर आँख है जिसकी
पूंछ बड़ी है अलबेली
मैं तो हंसकर उससे बोली
इतने में वह आँखे खोली
मेरी गाय है सबसे प्यारी

कोमल, कक्षा-3,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार-फरिया

आरती गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

सोडियम लगाए पानी में आग

पढ़ते हैं हम विज्ञान
लेते हैं सोडियम का ज्ञान
रूई में लपेटो तो करे कमाल
पानी में डालो तो लगेगी आग
सब समझते इसे जादु-टोना
पर यह है विज्ञान का धमाल।

सफेदी गुर्जर,
समूह-सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला
गिरिराजपुरा

गोल मिठाई

भाई ने खाई गोल मिठाई
सरपट दौड़ा कालू नाई
बड़ी रसीली गोल मिठाई
नाम बताओ मेरे भाई
कहाँ से लाई सुंदर मिठाई
शहर बड़ा है गंगापुर
तरह-तरह की बनी मिठाई
खाते रह जाओगे कालू भाई
खीरमोहन है बड़ा रसीला
लेने को लगता है मेला
गाड़ी में बैठ के तुम भी जाओ
बड़े प्रेम से मिठाई लाओ
सब मिलकर प्रेम से खाओ।

आरती, कक्षा-4,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार-फरिया

लक्ष्मी सैनी, कक्षा-9, उमंग प्रोग्राम श्यामपुरा

कैल्शियम की कमी

दो तीन साल पहले की बात है। मैं मिट्टी खाती थी इस बारे में किसी को पता नहीं था। एक बार मैं खेल रही थी तो हमारे खिलाने वाले शिक्षक को पता चल गया। उस शिक्षक ने बड़े वाले शिक्षक से कहा कि, "दीपा मिट्टी खाती है।"

एक बार स्कूल में मीटिंग हुई थी तो मेरे शिक्षक ने मेरे दादाजी को यह बात बताई। मेरे दादाजी ने मुझे भर्ती करवाया। मुझे एक महिने तक अस्पताल में भर्ती किया। मेरे खून की कमी आ गई थी। मेरे दादाजी ने मेरे खून चढ़वाया। मेरे एक महिने तक कोर्स चला फिर मैं दुबारा स्कूल आने लगी। मेरे अशोक शिक्षक ने कहा इसके कैल्शियम की कमी है। इसलिए यह पत्थर खाती है। यह अपनी मर्जी से नहीं खाती। इसे बार-बार हॉस्पिटल में दिखाते रहो। मुझे तीसरी बार कोर्स लगा तो मैंने पत्थर खाना बिल्कुल छोड़ दिया। पर मेरे घर वाले अब भी मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं कि इसने पत्थर खाना बिल्कुल छोड़ दिया है।

दीपा बाई, उम्र-13 वर्ष, समूह-सागर

मिनाक्षी बैरवा, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय रामसिंगपुरा

जादुई बोतल

प्रियंका मीना, कक्षा-7 फेलोशिप सेंटर खवा

मेरा नाम आरती है। मैं उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा स्कूल की कक्षा 8वीं में पढ़ती हूँ। एक दिन सर ने हमको वायु दाब के बारे में बताया। सर की बातंे हमें बिल्कुल समझ नहीं आ रही थी। इसलिए मैने सर से कहा, "सर कुछ समझ नहीं आ रहा, वायु कैसे दाब डालती है? वह तो बहुत हल्की होती है।""

सर ने हमें समझाने के लिए एक बोतल उठाई और हमें दी। हमसे कहा इसके पैंदे में कई सारे छेद कर दो। हमने एक तार को गरम करके बोतल के पैंदे में कई बार घुसाया। इस तरह उसमें कई सारे छेद हो गये। सर ने हमसे बोतल वापस ले ली और पूछा अगर हम इस बोतल में पानी भर कर ढक्कन को ठीक से बंद कर दें, तो क्या इसमें से पानी निकल जायेगा या नहीं निकलेगा? मेरे साथ-साथ सबने कहा, निकल जायेगा। तो सर ने कहा ठीक है। इसमें पानी भरो और ढक्कन को टाईट बंद करो।

हमने ऐसा ही किया। सर के पास लाने से पहले ही हमने करके देख लिया था। हमने देखा कि बोतल से बूंद भी पानी बाहर नहीं निकल रहा था। ऐसा लगा जैसे बोतल में छेद ही नहीं था। किसी ने कहा लगता है छेद बंद हो गये हैं फिर से तार डाल कर साफ करो। तब पानी निकलेगा। हमने तुरंत तार से छेदों को साफ किया। पर पानी नहीं निकला। यह तमाषा हमें समझ नहीं आया तो हम बोतल लेकर सर के पास चले गये। सर जानते थे कि हमने पहले ही सब करके देख लिया है। इसलिए उन्होने कहा, "पानी निकला या नहीं?" हमने कहा "नहीं।"

सर ने कहा, "अपने तार से एक छेद बोतल के ढक्कन पर भी करो।" जैसे ही छेद करके तार ढक्कन से बाहर निकाला तो पैंदे के छेदों से पानी निकलने लगा। यह देख कर सब ताली बजाने लगे। सबको यह एक जादु का खेल लगा और वे भूल गये कि हम कुछ पढ़ रहे थे। सर ने हमें षांत करते हुए अपना

प्रष्न पूछा, "ढक्कन पर छेद करने से पानी क्यों निकला?" सही जवाब नहीं आने पर सर ने फिर पूछा, "ढक्कन के छेद को अपनी उंगली से बंद करो ओर बताओ अब क्या हुआ?" सबने देखा पानी निकलना बंद हो गया। अब तो बच्चे कुछ देर तक ढक्कन के छेद को बंद करते और खोलते। उन्हे इसमें बड़ा मजा आ रहा था। जब वे षांत हुए तो सर ने फिर कहा, "ऐसा क्यों हो रहा है?" मैने सोचा सर वायुदाब पढ़ा रहे हैं तो वायु दाब के कारण ही हो रहा होगा। इसलिए बिना समझे ही कह दिया वायुदाब के कारण। सर जान गये कि मैने तुक्का मारा है। पर तुक्का सही जगह लगा था।

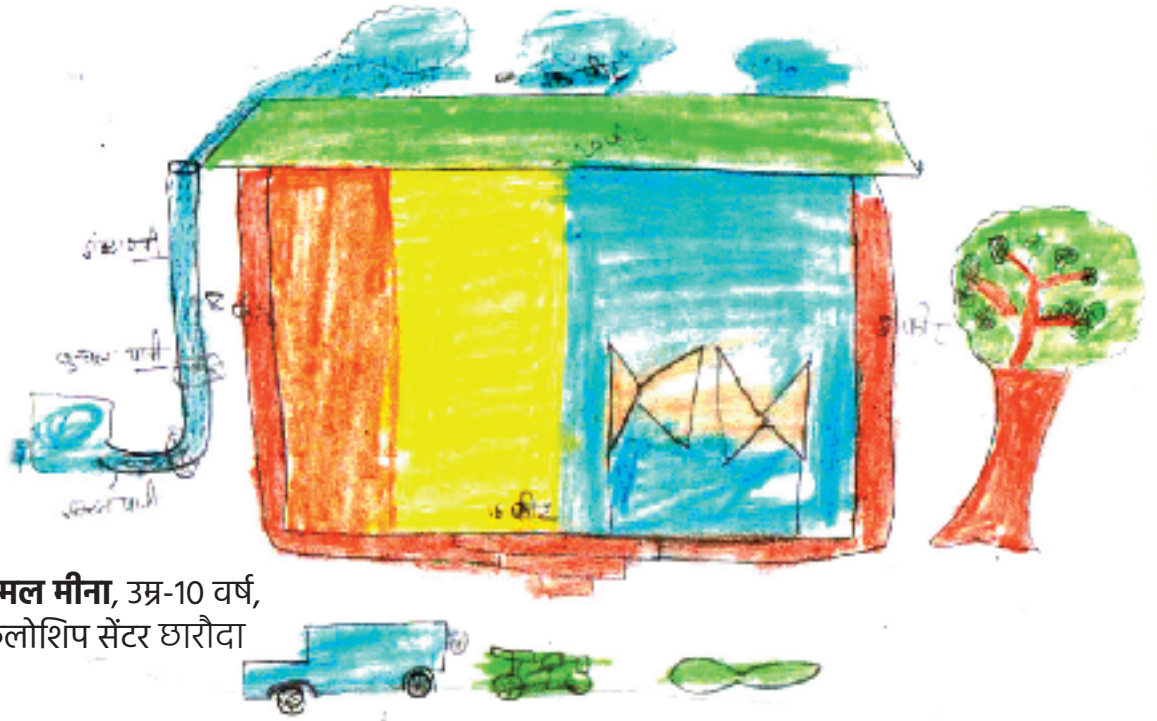

कोमल मीना, उम्र-10 वर्ष,
फेलोशिप सेंटर छारौदा

सर ने फिर पूछा बताओ कैसे? अब मै कैसे बताती। पर कुछ ना कुछ बोलती रही। अन्त में सर ने मुझे बैठा दिया और एक दो बच्चों से पूछने के बाद बताने लगे। वायु बोतल पर चारों तरफ है। पर बोतल बंद होने के कारण वायु उसके अंदर नहीं घुस पा रही थी। वायु बोतल के नीचे से अंदर जा सकती थी। पर बोतल के अंदर के पानी ने वायु को अंदर नहीं आने दिया और बाहर की वायु ने पानी को बाहर नहीं आने दिया। इसलिए वायु भी अंदर नहीं गई तो पानी भी बाहर नहीं आ सका। पर जब हमने ढक्कन में छेद किया तो ढक्कन के ऊपर की वायु अंदर गयी और पानी पर दाब ढालने लगी। जिसकी वजह से पानी की ताकत बढ़ गई और वह पैंदे के नीचे की वायु को हटाकर बाहर निकलने लगा। सर ने हमसे कहा कि अब ढक्कन में और छेद करो। हमने देखा ज्यादा छेद करने पर पानी ज्यादा तेजी से निकल रहा था। इसका मतलब था की वायु को अधिक दाब लगाने का मौका मिल रहा था। बच्चों के प्रष्नों का जवाब देने के लिए सर ने एक दो प्रयोग और करवाये। जिसके बाद तो सारे बच्चे समझ गये कि वायु किस प्रकार दाब डालती हैं। बाद में तो सबने अपने अपने लिए एक जादुई बोतल बनाई और घर जाकर लोगों को जादु दिखाने लगे।।

आरती, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

जोड़-तोड़

अलबर्ट आइंस्टाइन

वह गणित में बहुत कमजोर था। इसकी वजह से उसके सहपाठी और अध्यापक उसे बुद्धू समझते थे। उसके साथी उसके कोट के पीछे 'बुद्धू' लिखी पर्चा चिपका देते थे और फिर सभी उसकी हंसी उडाया करते थे।

सहपाठियों का ऐसा करना उसे अच्छा नहीं लगता था। वह अपने सहपाठियों से कहता, "माना कि मैं गणित में कमजोर हूँ, किंतु इसका यह अर्थ यह तो नहीं कि तुम मिलकर मेरा मजाक उड़ाओ।"

अमन सैनी, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा

लेकिन विरोध करने पर सहपाठी और दुगने वेग से उसका मजाक उड़ाते। जब उससे सहन ने हुआ तो उसने एक-दो लड़कों के साथ लड़ाई-झगडा भी किया। अपने अध्यापकों से उनकी षिकायत भी की। चुप रहने और कक्षा में पीछे बैठने की वजह से अध्यापक उसकी षिकायत पर कोई ध्यान नहीं देते थे। एक दिन तो कक्षा में एक अध्यापक ने भी उस पर व्यंग्य कसते हुए कहा, 'यह बुद्धू और किसी विषय में तो फिर भी पास हो सकता है, लेकिन गणित में तो सात जन्म में भी सफल नहीं हो सकता।'

अध्यापक का यह व्यंग्य बालक के कोमल हृदय को भेद गया। तब उसने सोचा, इस तरह विरोध करने, लड़ने-झगड़ने या षिकायत करने से कोई लाभ नहीं दिख रहा है। क्यों न मैं इन सब को गलत साबित कर दूं। उस दिन के बाद उसने कमर कसकर दिन-रात पूरी लगन के साथ गणित का अध्ययन षुरू कर दिया।

प्रारंभ में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उसने हिम्मत न हारी। गणित पर फतह हासिल करना उसका लक्ष्य बन गया और वह दिन रात गणित में ही डूबा रहने लगा। उसका खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना सब गणित ही बन गया। गणित के ज्ञान ने विज्ञान में उसकी इतनी दिलचस्पी पैदा कर दी कि बचपन में बुद्धू कहलाने वाला वह बालक सुप्रसिद्ध गणितज्ञ और महान बैज्ञानिक अलर्बट आइंसटाइन बना।

स्रोत : एन.बी.टी.

कलाकारी

पुऐ का पेड़

अंकिता सैनी, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर-खवा

पुराने समय की बात है। गाँव राजपुर में भोला नाम का एक युवक अपनी बुढ़ी अम्मा के साथ रहता था। उनकी स्थिति काफी गरीब थी। आमदनी का कोई स्त्रोत नहीं था। गाय-भैंस चराकर भोला अपना पेट-पालन करता था। वह रोज भैंस चराने जाता व शाम को घर लौट आता। भैंसों को चराते समय गाँव के अन्य ग्वाले भी उनके साथ रहते थे। वे सभी दोपहर में एक साथ बैठकर खाना खाते व पानी पीने के लिए नदी पर जाते थे। सभी साथी ग्वाले खाने में तरह-तरह के भोजन लाते जैसे पुए, पुड़ी, पराठे, नमकीन आदि। लेकिन भोला हमेशा ही सूखी रोटी लेकर जाता। उसके पास सब्जी भी नहीं होती। एक दिन सभी ग्वालों ने कहा, "भोला तू भी अपनी माँ से पुए-पुड़ी बनाने के लिए कहना।" शाम को भोला धर गया तो अपनी माँ से बोला, "माँ सभी साथी ग्वाले रोज तरह-तरह के भोजन लाते हैं। तू भी मेरे लिए आज पुए बना।" उसकी माँ ने उस दिन उसके लिए पुए बनाये। भोला ने शाम को खूब पुए खाये व बचे हुए पुए सुबह भैसों को चराने गया तो साथ में ले गया। दोपहर में सभी ने एक साथ बैठकर खाना खाया तो देखा कि भोला आज तो पुए लाया है। सुनकर भोला काफी खुश हुआ। खाना खाने के बाद भोला के पास एक पुआ बच गया जिसे नातने में बांध कर वह नदी पर पानी पीने चला गया। पानी पीने के बाद उसने सोचा आलू, टमाटर, बैंगन, खरबूजे, ककड़ी ये सभी तो उगते ही हैं क्यों न मैं पुऐ को भी उगाकर देखूँ। तब तो खूब सारे पुए आ जायेंगे। उसने पुए को नदी के किनारे एक गड्ढा बनाकर गाड़ दिया और कहा पुआ-पुआ कल उग ज्या ज्यो नहीं तो म्हारी भूरी भैंस न उखाड़ कर खुआ दूंगों। दूसरे दिन जब भोला ने जाकर देखा तो उग आया। भोला ने फिर कहा पुआ-पुआ कल गोडे-गोडे तक बडो हो ज्या ज्यो नहीं तो म्हारी भूरी भैंस ने उखाड़ कर खुआ दूंगो। दूसरे दिन पुआ का पेड़ गोडे-गोडे तक बड़ा हो गया। भोला ने फिर कहा पुआ-पुआ मौंसू बड़ो हो ज्या ज्यो नहीं तो म्हारी भूरी भैंस कू उखाड़ कर खुआ दूंगा। फिर पुए का पेड़ बड़ा हो गया। फिर भोला ने कहा पुआ-पुआ कल कच्चा-कच्चा पुआ आ ज्या ज्यो नहीं तो म्हारी भूरी भैंस ने उखाड ़कर खुआ दूंगो। फिर पेड़ में कच्चे-कच्चे पुए आ गये। फिर भोला ने कहा पुआ-पुआ कल तक सारे पुए पक जाने चाहिए नहीं तो ...। अगले दिन जब भोला ने जाकर देखा तो पेड़ के सारे पुए पक गये थे। यह देखकर भोला बहुत खुश हुआ और पेड़ पर बैठकर आराम से पुए खाने लगा। सभी ग्वाले भोला के पास आए और उससे पुए मांगने लगे, "यार भोला थोड़े से पुए हमें भी दे दो।" इस प्रकार भोला ने पुए का पेड़ उगाया।

जगदीश कोली, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

त्यौहार चला गया

दिवाली के दिन की बात है। सभी लोग पूजा करके बैठे थे। मैं खाट पर लेटे-लेटे गीत गा रहा था कि एक दम खाट से गिर गया। जिसके कारण मेरा होठ कट गया। मेरे होठ में से खून निकलने लगा। मेरी मम्मी यह देखकर घबरा गई। मेरी मम्मी ने मेरे होठों पर ट्यूब लगाई। फिर भी मेरा खून नहीं रूका। यह देखकर मेरी मम्मी रोने लगी और उन्होंने खाना भी नहीं खाया। मुझे मम्मी का रोना बहुत बुरा लगा। उन्हे देखकर मैं अपना दर्द भूल गया।

अगले दिन सुबह मेरा होठ और ज्यादा सूजकर मोटा गया तो मेरे पापा मुझे स्टेशन पर लेकर गये। वहाँ डॉक्टर ने सुबह-शाम मेरे सुई लगाई। कुछ दिन बाद मैं ठीक हो गया। पर तब तक दीपावली का त्यौहार जा चूका था और मैं अच्छे अच्छे पकवानों का आनंद नहीं ले सका।

विनोद, उम्र-5 वर्ष, समूह-फुलवारी

गर्म राबड़ी

बहुत दिन पहले की बात है। हम तीनों भाई-बहन खाना खा रहे थे। पीछे हमारे राबड़ी की भगोनी रखी हुई थी। तब विनोद पानी पीने के लिए उठा और थोड़ा पीछे खिसका तो उसका पैर राबड़ी की भगोनी में चला गया और राबड़ी से जल गया। मेरी मम्मी नहीं जानती थी कि कोई भी व्यक्ति जला हो तो उस पर पानी नहीं डालना चाहिए। मेरी मम्मी ने विनोद के पैर पर पानी डाल दिया।

एक आदमी ने कहा कि इस पर आंकड़े का दूध डालो तो मेरी पम्मी ने उस पर आंकड़े का दूध डाल दिया। फिर हम मेरे भाई को बंगाली डॉक्टर के लेके गये। उसने कहा यहाँ इजाल नहीं होगा तो फिर दूसरे दिन पड़ौसी की मोटर साईकिल लेकर मेरी मौसी के यहाँ मलारना डूंगर गये। वहाँ दवाई लगवाई एवं पट्टी करवाई तो थोड़ा फायदा हुआ। फिर दूसरे दिन सवाई माधोपुर में डाक्टर के पास गये। उसने जले हुए स्थान पर मलहम दवाई लगाई तथा 80 रूपये का दवाई का एक डिब्बा लगाने के लिए दिया। कुछ दिनों में मेरे भाई विनोद का पैर ठीक हो गया। हम उसको अभी भी बचाकर रखते हैं।

आरती गुर्जर, उम्र-11 वर्ष, समूह-सागर

डंडे की मार

मेरा छोटा भाई दीपू उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा में पढ़ता है। जब वह पहली बार आया तो वह स्कूल आने में डरता था। वह इसलिए डरता था कि वह जब पहली बार आमली की सरकारी स्कूल में पढ़ने गया था तो वह कक्षा में से बिना कहे पानी पीने के लिए चला गया। वहाँ के गुरूजी को पता चल गया। फिर गुरूजी ने मेरे भाई को डण्डे से मारा जिसके कारण वह स्कूल आने से डरता है। अब वह उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा में पढ़ता है। वह स्कूल आने में कुछ दिनों तक डरा परन्तु जब उसने देखा कि यहाँ बिना कहे पानी-पेषाब जाने पर गुरूजी मारते नहीं हैं। ऊपर से उसे बच्चे खेलते हुए नजर आते तो उसका विश्वास और बढ़ गया कि यहाँ नहीं मारते हैं। वह रोज स्कूल आता है। अब उदय सामुदायिक पाठशाला में पढ़ता है।

हेमन्त गौड़, उम्र-11 वर्ष, समूह-सागर

अभिषेक, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

माथा पच्ची

1. रीना की मम्मी के चार लड़कियाँ हैं - पहली का नाम दुक्की, दूसरी का नाम तिक्की, तीसरी का नाम-चौकी है तो चौथी लड़की का क्या नाम है?
2. ऐसा कौनसा दान है, जो अमीर और गरीब सभी करते हैं?
3. वह कौनसी चीज है जो दो बार फ्रि मिलती है पर तीसरी बार नहीं?
4. जो करता है वायु शुद्ध, फल देकर जो पेट भरे, मानव बना है उसका दुश्मन, फिर भी वह उपकार करे?
5. धन-दौलत से बड़ी है यह, सब चीजों से ऊपर है यह, जो पाए पंडित बन जाये, बिन पाये मूरख कहलाये?

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

कुलदीप गौड़, समूह-झिलमिल, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

हीहीही-ठीठीठी

1. टीचर - कल होमवर्क नहीं किया तो मुर्गा बनाऊंगा।
   छात्र - सर मुर्गा तो मैं नहीं खाता, मटर-पनीर बनाना।

2. चुन्नू - पापा हम अब धनवान हो जायेंगे।
   पापा - बेटा ऐसा कैसे हो सकता है?
   चुन्नू - कल हमारे टीचर पैसों को रूपयों में बदलना सिखायेंगे।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

मोटूराम की चोटी
गांठ लगाए मोटी...

विजय गुर्जर
समूह-झरना, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरीराजपुरा द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

ज्योति गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

चंद्रमोहन, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर खवा

एक बार एक लोमड़ी बहुत भूखी थी। उसे अंगूरों का एक बगीचा दिखा। अंगूर बहुत ऊपर थे। वह अंगूर की बेल पर चढ़ती तो अंगूर नीचे आ जाते और लोमड़ी नीचे आती तो अंगूर वापस ऊपर पहुँच जाते। लोमड़ी ऊपर-नीचे आते-जाते बहुत थक गई। लोमड़ी ने सोचा ये अंगूर.....

समुद्र, उम्र-5 वर्ष, समूह-फुलवारी द्वारा शुरु की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

चेतना वर्मा कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा मालियान

दिव्या सैनी, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा मालियान

पहेलियों के ज़वाब -

1. रीना 2. मतदान 3. दांत 4. पेड़ 5. शिक्षा

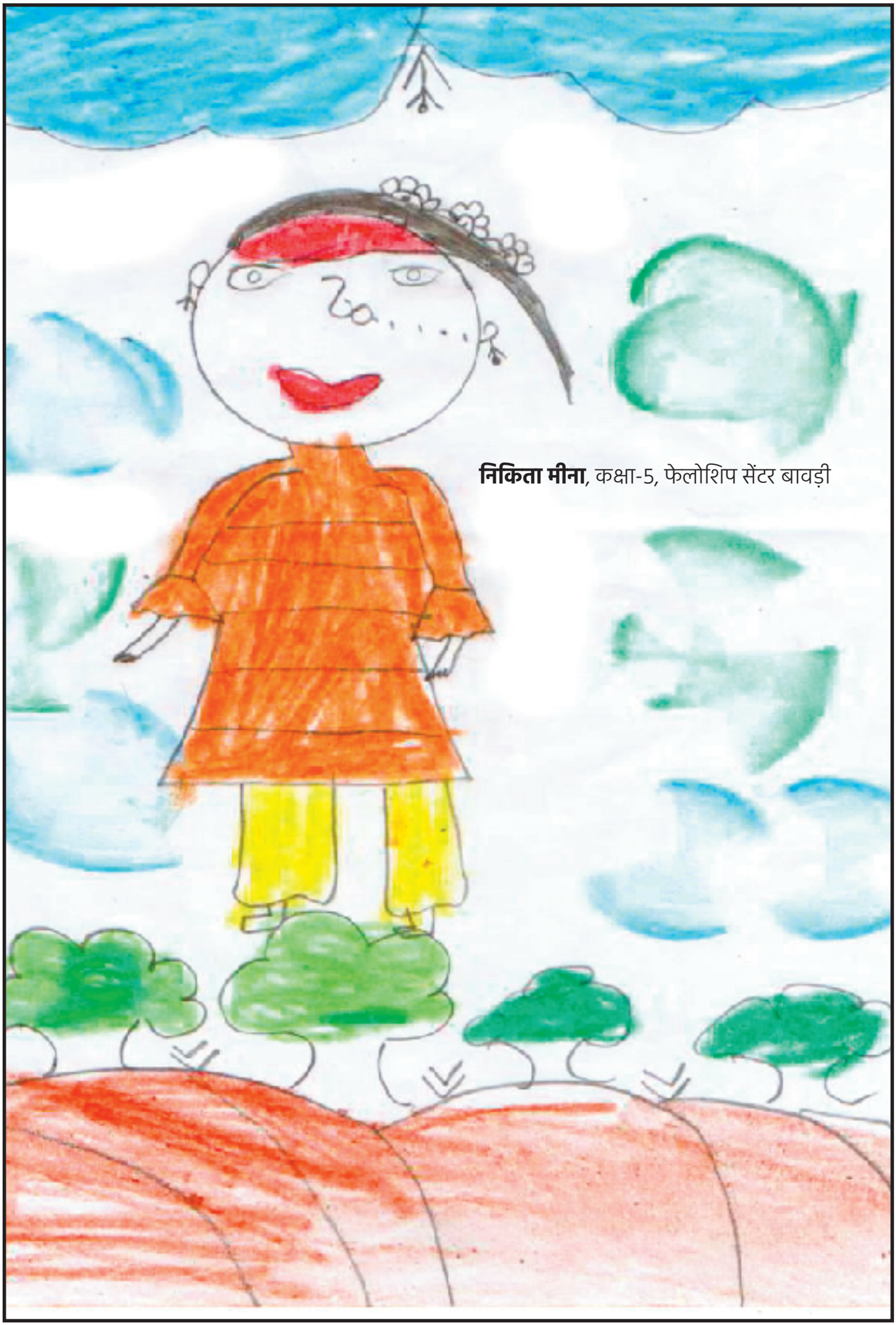

निकिता मीना, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर बावड़ी